# शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक
प्रो. बी. एल. जैन

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-920597-1-6

कृति : शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक : प्रो. बी. एल. जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूं 341306 (राजस्थान)

सम्पादक मण्डल : डॉ. मनीष भटनागर
डॉ. विष्णु कुमार
डॉ. सरोज राय
डॉ. आभा सिंह
डॉ भावग्राहीप्रधान
डॉ. अमिता जैन
डॉ. गिरिराज भोजक
डॉ गिरधारी लाल शर्मा

संस्करण : मई, 2018 (प्रथम)

मूल्य : 200/-

प्रकाशन : महावीर पथ पब्लिकेशन
(प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान)
लाडनूं -341306 (राजस्थान)
Ph. 7220089301, 7220089302,
www.pvjss.com, email: pvjss108@gmail.com

कम्प्यूटराईज्ड : वैशाली ग्राफिक्स, लाडनूं

मुद्रक : जैन कम्प्यूटर, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान)

Scanned by CamScanner

# शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

डॉ. आभा सिंह

आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सम्मुख एक बड़ा प्रश्न मुँह खोले खड़ा है कि "क्या यह शिक्षा बालकों का सर्वांगीण विकास करती है?" क्या जो शिक्षा का स्वरूप हमारे सामने है वह सर्वेभवन्तुसुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः सर्वेभद्राणि प्रयन्तु मा मष्विद् दुःख भाग्भवेत् एवं सत्यम् शिवम, सुन्दरम् की भावना का विकास करने में सक्षम है? जिस राष्ट्र की पहचान ही वहां के ज्ञान, आदर्षएवं मूल्यों से हुआ करती थी, आज जो शिक्षा हमारे राष्ट्र के भविश्य, राष्ट्र निर्माताओं, हमारे बालकों को दी जा रही है वह हमारी संस्कृति की सम्पोशक है।

इसका जवाब देना आसान नहीं है क्योंकि आज की शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने के उद्देष्य तक सीमित होती जा रही है।

आज की शिक्षा मनुष्य को मनुष्य होने से वंचित कर रही है। वह व्यक्ति को सभी वह चीजें सीखा रही हैं जो उसे मनुष्य से मशीन बना रही हैं। अथवा उसमें मनुष्यता के गुण को समाप्त करती जा रही है। वह उनमें ऐसे गुणों का विकास कर रही है जो स्वयं उसके लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं जैसे–प्रतियोगिता, तुलना, महत्त्वाकांक्षा, अहंकार, परिग्रह, स्वार्थपरता।

तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा के कारण एक ऐसा वर्ग विकसित होता जा रहा है जो नई सोच और नई जीवन–शैली विकसित कर रहा है। वह जीवन–शैली जो व्यक्ति को देश की संस्कृति, आस्था, अध्यात्म, भाशा, परम्परा, मान्यताओं से दूर कर रहा है। आज यह वर्ग असंतोश, अविष्वास, भौतिकतावादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण परिवेष का निर्माण कर रहा है। मानवीय मूल्य व मानवीय संस्कृति की संवेदना शून्य सी हो गयी है। आधुनिकता एवं तकनीकी के दौर में मनुष्य आध्यात्मिक जीवन मूल्यों के ह्रास, बौद्धिक दासता व कुंठित सांस्कृतिक पतन की ओर चल पड़ा है। इसका दोशी कौन है?

इसका सरल सा जवाब है आज की शिक्षा। वर्तमान शिक्षा व्यक्ति में संस्कारों, आदर्षों तथा मूल्यों के स्थान पर केवल निरी व्यावसायिकता का आवरण चढ़ाए भौतिकवादी दषश्टिकोण एवं भौतिकताप्रिय मानव देह का निर्माण कर रही



Scanned by CamScanner